करती
की पुनर्खोज
बदकर
भूमिका तैयार

का
समय की
रचती है ।

के कवि है
विविधता के
दी है ।
गरिमा से
नातेदारी ɜ
किसी
मानिक
स्नान की

नहला देती
एक

पत्तियां करतीं स्नान

पत्तियां करतीं स्नान

मानिक बच्छावत

समकालीन सृजन
20, बालमुकुंद मक्कर रोड
कोलकाता - 700 007

प्रकाशक — समकालीन सृजन
20 बालमुकुद मक्कर रोड कालकाता - 700 007

मानिक बच्छावत

प्रथम सस्करण — 2003

आवरण — पत्र कुवर बच्छावत

मुद्रक — अमृताक्षर, 2 सी एन सी चाधुरी राड,
कालकाता - 700 042 फोन 2415 1690

मूल्य — 100/-

PATTIYAN KARTEEN SNAN
By Manik Bachhawat

उन

तमाम लोगो

को

जिन्हाने

मुझे

वहुत सारा

प्यार

ओर

अपनापन दिया।

क्रम

पत्तिया करती स्नान

पत्तिया
करतीं स्नान
वरसात की वूदों की
छुअन स
उभरता
गान।

व
मल मल
नहातीं वदन
जैस युवतिया
धातीं
अपना तन।

वे थिरकतीं
चहकतीं महकतीं
रुकतीं
वरसात थमन तक।

लगता कइ सद्य स्नाताए
निकल रही हैं
अपनी ताजा
देह गध के सग
अगड़ाइया
भरता उनका
अग प्रत्यग।

पत्तिया हिचकाले लर्ती
टहनियों पर
झूलर्ती पेंग भरतीं
हो जातीं
स्तब्ध
देखते ही बनता
उनका कौतूहल
भरा ढग
बहुत सुन्दर लगता
उनके
बदन का
ताजा हरा रग।

महकती है जमीन

बरसात की
बूंदें गिरते ही
उठती है एक
सोंधी गंध।

महकने लगती है
जमीन
फैलने लगती है
वातावरण में
एक नशीली
हवा।

हल्की सी
धूल की फुहारें
फैलती हैं
वातावरण में
लगता है
नासिकाओं में

भर रहा हे एक
नशा
मन को सुवासित करता।

आस पास
रिसने लगती हे
फूला की
महक।

माटी की मीठी
हवा
मन को उन्मत्त करती
तेरने लगती है
चारो ओर
एक आदिम गध
महकने लगती है
जमीन
चित्त को
मदहाश करती।

हमारे बीच

तुम्हारे और हमारे
बीच
एक झरना है
जो
उन्मुक्त होकर
कल कल करता
उछलता
बह रहा है
हमारे कानों में
कुछ कह रहा है
उसके स्वरों में
गुनगुनाहट है
हर पत्ते को
ताजा हवा
उसे छूती है

कहती है
यह समय तुम्हें
अकेले
छोडने का नहीं
अच्छा हो
सिमटते हुए चले
बाहों म बाहे डाले
पेडो की डाला
जसे मिले।

वह पेड

तुमन लगाया था
वह पेड़
पहले वह बिरवा बना
फिर पाधा
आर अब वह बनने
लगा है पेड
पर अव तुमने उसे
सींचना बन्द कर दिया।

वह धीरे-धीरे
मुरझाने लगा ह
मरने लगा है
तुम्हारे भीतर एक
गहरी उदासीनता
भरती जा रही ह
वह तुम्हे
खोखला करती जा रही है।

तुम नहीं जानते
तुम्हारी इस लापरवाही का
अजाम क्या होगा
तुम्हार भीतर के
मनुष्य का क्या होगा।

पेड सिफ पेड नहीं हे
उसक प्राणा म
तुम्हारे जीवन का
सन्देश हे।

लोग

अच्छा हो
लोग
हमे सामान्य
लोगो की तरह
देखें।

हम जब
उनके बीच हो
तो
वे हमे अपने जैसा ही
समझें।

ऐसा यदि हो तो
हम
उनमे होगे
ओर वे
हममे होंगे
सोच के जो
रास्ते तग ह
वे चौडे होगे।

मुस्कुराहट

जब हम
दिल से मुस्कुराते हे
लोगों मे एक अजीब
आह्लाद और उत्साह भरते है
उदासी और मायूसी से
उन्हें
अलग करते ह।

ऐसा करते वक्त
लोग भीतर के
रेगिस्तान को चीर कर
पहाड़ों से उतरते
झरने की तरह बहते है।

पल भर के लिए
लाग
सारा दु ख भूलते है
और हमारे साथ

सुखों में बसते हैं
हमें अपना समझते है
जैसे
हमसे निकट
उनका कोई नहीं
तब
हमें अपनी मुस्कुराहट
पर नाज होता है
हम उसे हर वक्त
अपने
ओठों पर रखना चाहते है।

खुलकर
बाटना चाहते हैं
हर समय
मुस्कुराकर
जीना चाहते है।

आम के तीन पेड

पहले हम जहा
रहते थे
वहा थोडी
खुली जमीन थी
ओर हमने लगाए थे
आम के तीन पेड।

रोज सुबह
उठकर देखते थे
इन पेडों को
पेड बडे हो रहे थे
लहलहा रहे थे
और हम
खुश हो रहे थे
पर
एक दिन हमे वह
जगह छोडनी पडी
हम कहीं
दूर चले गए

हवा के बदलते रग

हवा का रग
बदलने लगा है।

जो रूखी थी, गर्म थी
आधियों की तरह बरस रही थी
अब नम और
सरस होने लगी है।

मन जो कभी उदास था
गर्मियों से उबल रहा था
उमस से झुलस रहा था
अब शीतल झोंकों मे
पेंगें मारने लगा है
वह मचलने लगा है
ठण्डी हवा के साथ
बहने लगा है।

अब
सचमुच प्रेम करने का

प्यार करो

यदि
प्यार करते हो तो
खुलकर करो
लोग कुछ कहते हे तो
कहने दो
उनसे मत डरो।

वे निष्ठुर-नासमझ है
उन्हे नहीं मालूम कि
तुम जो कर रहे हो
वह एक
अद्‌भुत अनुभव है
रोमास भरा मादक
सरसरा कम्पन है
जिसके लिए
किसी भाषा की
जरूरत नहीं
वह तो एक

नैसर्गिक
आनन्द का स्वर है
जो उर के
अन्तर से उठा है
उस उदात्त की सीमा नहीं है।

तुम मन को खोलो
भीतर जो भी है
उसे खगोलो
बस
प्यार की बोली बोलो
जिसे प्यार करते हो
उसके साथ हो लो।

वह

मेरे साथ-साथ
चल रही है वह
मेरी छाया की तरह।

मेरे सपनो म
खिल रही हे वह
एक अनिद्य सुन्दरी
काया की तरह
मेरी पलको पर
बैठी है वह
मेरी सासों में
रात-दिन
इर्द गिर्द
घूमती है वह
मुझे मोहपाश मे
बाधे जादूगरनी सी
माया की तरह।

वह कोन है
उसका बयान करना
मुश्किल है
बस
खयालों में
घुलते रहना है
उसके अन्दाज में
डूबे रहना है
खोये रहना है
हमसाये की तरह।

छिपी हुई नदी

वादलों की
चादर ओढकर सा गइ
नदी
धुध के अधियारे मे
खा गई नदी।

किनारे की धार से
चिपटकर
पसर गइ नदी
जगलो के जाल में
फसकर
छिप गई नदी।

कल-कल की
आवाज करती
चुपचाप मौन हो
बहती
गूगी बनी नदी।

फिर भी नदी नदी थी
वह सोई नहीं थी
खोई नहीं थी
मरी नहीं थी
वह अपने पूरे योवन म थी
वेग मे थी
छिपी हुई नदी
पूरे जोश-उमग मे
बह रही थी
अपने स्वर-गान में
कह रही थी
दिखती नहीं हूँ मैं
पर हूँ
म नदी।

फिर गया मे गाव

फिर गया मै
हरे-भरे खेतों की मेडों में
जहा तहा चरती भडों में
कुए पर पानी की डबडबाहट में
डूबा मै
पानी के भरते डोलों में
चलता रहा टेड़ी-मेढी
पगडण्डिया पर
थककर बैठ गया
कीचड़ सने पाव मे
बरगद की छाव मे।

गाव की चापाल पर गप्पे
हुक्का पीते लोग
चाय की चुस्किया
ट्रेक्टरो पर अनाज भरते
देख कुछ वसा ही लगा
जैसा वर्षों पहल का

छोटा स्कूल
पेड़ों क नीचे पढते बच्चे
लग अच्छ।

दो कमरावाला अस्पताल
हाल बेहाल
दारू की दुकान
लोगों की वही पुरानी चाल।

अब भी शाम का कीतन
मन्दिर में पूजा
मस्जिद में अजान
खटिया पर आराम करते
दिखे बडे-बूढे
खेतों से लौटते किसान।

चूल्हों से उठता धुआँ
टिमटिमाती ढिबरिया
शाम को भोजन का समय
पके धान की खुशबू
बर्षों बाद लाटने पर
कुछ नहीं बदला
सब कुछ वैसे ही लगा
इस गाव मे।

दूर का गीत

दूर कहीं
पहाड़ों की गोद में
सुनाई पड़ता है
मधुर गीत
कोई झूमकर गा रहा है
लोकगीत
जिसमें भरा है
प्रकृति का जादू
जो नैसर्गिक है
ओर
इस निर्जनता मे
अविरल अदम्य
गूज रहा है।

इन कठ स्वरो से
जो सुनाइ देती हे
सुरीली आवाज
उसे किसी राग की

जरूरत नहीं
पहचान की जरूरत नहीं
वह तो
पवित्र आदिम राग है
जो सदियों से
इन घाटियों के
अनत में
गूंज रहा है
जिसकी ध्वनि
दूर-दूर तक
सुनाई देती है और
जिसे सुनकर
हम अपने
तन-मन की
सुध बुध खो बैठते हैं।

जामुन का पेड

पिता ने
तालाब के किनारे
लगाया था
जामुन का पेड़
काफी मेहनत आर
देखरेख से
कुछ वर्षों मे
बड़ा हो गया
जामुन का पेड़।

अब लगने लगे
उसमें फल
बहुत मीठे और
जायकेदार
पिता अब नहीं रहे
पर हम हर वर्ष
खा रहे है जामुन।

शब्दो का अन्तहीन सिलसिला

बहुत अच्छा लगता है
शब्दों से खेलना।

कई शब्द हैं जो
खुद-ब-खुद आते हैं
कई बुलाए जाते हैं
कई फुसलाए जाते हैं
कई रूठकर बैठे है
मनाए जाते है
शब्दों का अन्तहीन
सिलसिला
देखते ही बनता है।

उनका
सज-धज कर बैठना
मन का लालायित करता है
बहुत सारे शब्द बैठे हैं
छिपकर

खतों की हरियाली में
पड़ों की फैली कतारों में
पराड़ों पर गिरि कन्दराओं में
गह्वरों, पाखरों, तालावों
दूर तक फैली लम्बी झीलों में
सागर की लहरों में
आकाश क विचरत बादलों में
सघन वनों के अन्तरालों में
चिड़ियों क गानों में
उनकी ऊँची उड़ानों में।

शब्द
तरह तरह क हैं
अनक रगों क ह
दु खों के है सुखा क है
कुछ ज्ञान के है अज्ञान के है
ध्यान के है।

कुछ दशी हैं
कुछ आयातित
शब्द मायावी ह
कुछ मीठे ह कुछ खट्टे
कुरकुरे ह तीखे ह
मगर शब्द
शक्तिशाली ह।

तीरा की तरह चुभते हे

शब्द
छिपकर धसकर
मन के किसी कोने में बैठे है
बस उनको खगालते रहना है
जब जी मे आए
चुनना है
पिरोना है
खेलते रहना है।

हवाओ का गीत

(1)

हवाए
सन-सन करती आती हैं
अपने ओठों से
एक मोहक राग
गुनगुनाती हैं।

वे लहरों का आलिंगन
करती थिरकती है
पहाड़ों की छाती पर मचलती है
आवारा बादलों को
अपनी उमगों से ढकेलती हैं
उन्हें आकाश में एक
छोर से दूसरे छोर तक
घुमाती हैं
वे मैदानों मे चिपककर
सास लेती हैं

पेडों को अपनी
बाहा में भरती है
पत्तिया सुबकती हैं
वे हवाओं को मना करती है
उनको इनका साय-साय करना
अच्छा नहीं लगता
हवाए
उन्हें अनसुना किए गुनगुनाती है
वे फूलो को अपने
ओठों से चूमती है
फूल मस्त होकर
हवाओं के कानों मे
कुछ कहते हैं
हवाए नटखट होकर
शहरो में गाते हुए घुसती है
लोगों के घरों में
आगन में खिड़कियों में
दस्तकें देती हैं।

(2)

लोग हवाओं के गीतों में
बहते है
डरते हैं
इनका सगीत
उन्हें अच्छा नहीं लगता
हवाए कव मानती हैं

वे निरकुश हैं
दहाड़ती है
आवारा वनी इधर-उधर
घूमती फिरती हैं
वे माताल होकर
गाती हैं
चारों तरफ मडराती
इठलाती चली जाती है।

बीते हुए दिन

वे
दिन कितने सुन्दर थे
जो बीत गए।

अब तो सिर्फ
रह गई हैं
उनकी यादें
जो आज भी ताजा हैं।

जब भी
अकेला होता हूँ
तो याद आते हैं
वे दिन
मां की गोद में
लेटे हुए
पिता की अंगुली
पकड़ चलते हुए
भाइयों बहनों के साथ

खेलते हुए
घर क आगन म
चहकते हुए
लगता है
जैसे बगिया मे
फूल महकत हुए
बहनों के दुलार से
चहकते हुए।

जानता हूँ अब
वे दिन नहीं लौटेंगे
पर
उनकी खुशबू
मेरे भीतर गमकते हुए
मुझमें उल्लास भरते हुए
आज भी ताजा है
बीते दिनों को
याद करते हुए
मै सब कुछ भूल जाता हूँ
अपने अतीत में
रहते हुए।

रेत पर पैर

हम चलते है
रेत पर
रखते हुए अपने पैर
आगे बढते है
चलते जाते है
पैर रेत म धँसकर
ऊपर उठते जाते हैं।

पीछे पड़ते है
रेत पर
पैरों के धुधले
निशान
गड्ढे बनाते हुए
अपने पैरो के आकार की
छाप छोडते हुए।

कुछ ही देर मे
ये निशान मिट जाते है

रेत की परतें उन्हें
ढकती जाती ह
और थोडी ही देर में
ऐसा कुछ हो जाता हे
लगता हे
जेसे
इस रेत पर कोई
चला ही न हो
इससे होकर कोइ
गुजरा ही न हो।

रेत पर दौडती
हवा की तेज लहरे
इन तमाम
निशानों को मिटा देती हैं
लगता है
हवा को
रेत का पैरो से
रौदा जाना
पसन्द नहीं।

नदी सिर्फ नदी नही हे

नदी सिर्फ नदी नहीं हे
वह हे
मा
भरती है धरती की
कोख
लहराती है खेतो की हरियाली
उसकी धारा से
गहराते हैं
वन, पहाड, जगल
इठलाते ह फूल
कुहुकते ह पक्षी
छपछपाती ह मछलिया
चलती हैं नाव।

किनारा पर
सद्य स्नाता सुन्दरिया
प्रेमियो का एकान्त
पुजारिया का आचमन

मृतका का अन्तिम
सस्कार
बसते है गाव-शहर
फलता-फूलता है व्यापार
नदी होती है
देशो का इतिहास।

डूबता हुआ मे

वे
मुझे डूबते हुए देख रहे थे
हँस रहे थे
पर मै अभी डूबा नहीं था
पानी सिर्फ मेरी
कमर तक आया था
धीरे-धीरे आगे बढ रहा था
मुझे लील रहा था।

मेरी गर्दन अभी भी
खतरे के ऊपर थी
और मै
उन्हें देख पा रहा था
जो देख रहे थे मुझे।

मैं उनमें से
एक एक को
पहचान रहा था

मने खुद को बचाने की
कोई गुहार नहीं लगाई
मदद के लिए
नहीं रोया चिल्लाया
क्योंकि मै जानता था
मुझे डुबाने की
साजिश
उन्हीं लोगों ने रची थी।

मने अपने बचाव में
अपने दोनो हाथ
मजबूती से ऊपर उठाए
सिर को ऊचा किया
और
पानी के भीतर
खुद ही चला गया
बहुत गहरे।

भीतर ही भीतर
पानी के तेज वेग को
काटते
पूरी ताकत स
निकल गया
दूसरे किनारे पर।

चील की उडान

वह
अपने डैने फैलाती है और
हवा को चीरते हुए
आसमान मे उड जाती है।

हवा बहुत जोर लगाती ह
पर उसका
कुछ नहीं बिगाड़ पाती
वह हवा के रुख को
पहचानती है और
उसके झोंकों को
धोखा देती
गतव्य तक्र उड़ती चली जाती है।

वह खराब मौसम से
नहीं डरती
आधी तूफान से लड़ती है
उस

अपने बच्चों को
भोजन देना है
अत
वह नीचे उतरती है
उड़ान भरती है ओर जो भी
छोटे-मोटे जीव-जन्तु
मिल जाए
उसे चोच से पकड़
पजों मे दबाते हुए अपने
घोसले में ले जाती है
हवा उसे लाख धमकाए
उसका कुछ नहीं कर पाती है।

जगल के फूल

उन जगली फूलों ने
मुझे बहुत कुछ दिया।

वे न किसी के
बगीचे मे उगे
न उन्होंने किसी के
आगन की
जगह घेरी
न वे गमलों में सजे
यहा तक कि
वे न किसी गुलदस्ते में
सजाए गए
न वे किसी सुन्दरी की
वेणियों में गुथे।

उनको किसी ने
नाम नहीं दिया
न किसी

पुष्प प्रतियोगिता मे
हिस्सा लिया
पर
मुझे वे जगला मे
लहराते थिरकते
किसी भी
जातिवान फूल से
अच्छे लगे प्यारे लगे
पालतू
फूलों से न्यारे लगे।

जहरीली नदी

वह नदी
अब पहले जैसी नहीं रही।

लोग अब उसका पानी
पीने से कतराते है
उससे होकर जो हवा आती है
वह जहर उगल रही है
लोग
उसका पानी पीकर
पगु हो रहे है
उनकी आखो की
रोशनी कम हो रही है।

कभी यह नदी
प्राणदायिनी थी
अमृत उगलती थी
पर जबस
उस दत्य ने

इसके किनारे
अपना बसेरा किया है
विपाक्त
रिसाव से
हवा काप रही है
मछलिया सड़ रही ह
पशु पक्षी मर रहे हैं
लोगों के
हाथ पैर टेढ़े-मेढ़े हो रहे है
सब कह रहे है
नदी पर मत जाओ
नदी जहरीली हो गई है।

काच का घर

उस काच के
घर से बाहर आओ।

अन्दर रहने पर
उन वनस्पतियों की
तरह हो जाओगे
जो बाहर निकलते ही
मुरझा जाती है
श्लथ होकर गिर जाती है।

बाहर की ताजा हवा
तुम्हारी प्रतीक्षा में है।

भेडे

वे
अब भेड़ें हाकते है
क्योंकि
ऐसा करना बहुत सहज है
चार-पाच लोग
कुछ भेड़ों के कान पकड़ते है
और उन्हें आगे लेकर चलते हैं
बाकी सब भेड़ें उनका
अनुगमन करती है
वे पीछे हो लेती है।

क्योकि —
यदि एक भेड़ कुए मे
कूदती है तो
सारी भेड़े
कुए में छलाग लगा देती है।

उन्हें जिधर हाँको
उधर दुर जाती है
व मूक रहती है
व नहीं जानती
उन्हें कौन
किधर ले जा रहा है,
क्यों ल जा रहा है।

लीची बागान

लीचियो का
बागान उस छोटी सी
पहाडी पर
एक ही ऊँचाई में
उगे वे
कतारो मे सिलसिले से खडे
पेड़ बहुत खूबसूरत
दिख रहे थे
दूर से देखने पर
लगता किसी ने
एक साथ
कई हरी छतरिया
खोलकर टाक दी है।

उनके
हरे चिकने पत्ते
बड़े लुभावन लगते थ
जैस किसी ने फैला दी हो

बन्दनवारें
जो हवा के झोंको से
खिलखिला कर हस रही है।

उस चतुर
माली ने बड़ी सूझ-बूझ
के साथ
उगाए थे ये पेड
अपने मालिक के लिए
जो इन लजीज
फलो का शौकीन था।

मौसम में जब
लगन लगते थ
फल
पहले व हरे दिखते
बढ़न पर पकन लगते
तब बदलने लगता
उनका रग जो
कहीं होता लाल
कहीं भूरा और
कहीं-कहीं हरा
इस तरह तैयार हो जाने
पर फल
छब्बियो मे भरे जाते
मालिक के यहा

पहुचा दिए जाते
पर
बागान के माली को
कभी भर पेट
खाने को नहीं मिलता
फिर भी वह
इन्ह फलते फूलते देख
खुश होता।
यह बाग उसकी
जीवन भर की
कड़ी मेहनत का फल था
ये पेड उसको
अपने पुत्रों जेसे
लगते।

पर्वत

न जाने कब से
सिर ऊँचा किए
सीना ताने बाह फेलाए खडा हूँ म
एक निश्चल सशक्त प्रहरी-सा
पौरुषवान
दिव्यकाय
विशाल बदन
पर्वत हूँ म।

आधी बिजली तूफान से लड़ता हूँ मे
कोई पार से
लाघ कर आना चाहे तो
बीच म पडता हूँ म
मेरी वन सपदा लागो को
जीवन देती हे।

म ही हूँ जा बफ
जमा करता हूँ आर

उसे नदी नाले झरन में
वदल दता हूँ।

गर्मी में
लोगों को प्राण
देता हूँ
मैदानों खत खलिहानों में
वादलों से टकराकर
त्राण देता हूँ।

लोग
तभी मेरी ओर
इशारा कर
कहते हैं
पर्वत की तरह
अडिग खड़े रहो
और मै
पूरी गरिमा महसूस करता
खड़ा हूँ।

लंगर

हम जहाज पर चलते हे
चारा तरफ
समुद्र ही समुद्र हे
सिर्फ दिखाई देता है
गहरा नीला जल
जल ही जल
हा कभी-कभी
कोई जहाज दिखाई देता है
तो हम
सब कुछ छोड़कर उस
जहाज के यात्रियो का
अभिवादन करते है
हमे भी प्रत्युत्तर में
अभिवादन की
गर्मजोशी महसूस होती है।

पर क्षण भर मे
सब ओझल हो जाता है

और जहाज फिर पहले की तरह
रफ्तार में आ जाता है
फिर वही साय-साय की
आवाजें
केबिन से डेक पर
डेक से केबिन में
पूरा दिन यों ही खत्म हो जाता है।

पर
अचानक जब कभी
थोड़ी सी जमीन किनारे पर
दिखती है
बिलकुल किसी लकीर की तरह
तो मन उत्फुल्ल हो उठता है
हम उछलन लगते ह
आखिर किनारे आ लगते है
डालते ह लगर
जहाज को
रोकने क लिए
बाधने के लिए।

मन ही मन
बहुत प्रसन्न होते है
रखते हुए अपना पाव
जमीन पर।

लगता है जैसे

पहली बार छू रहे है जमीन को
दो दिन का पड़ाव है यहा
सिर्फ दो दिन का
फिर तीसरे दिन जब
उठता है जहाज का
लगर
लगता है न जाने अब
कहा होगा ठहराव
इस जीवन में
जैसे सब कुछ यात्रा है
सिर्फ यात्रा।

मेना

एक थी मेना
नदी किनारे उसका घर
पेड़ पर रहती
स्वच्छन्द विचरती
कू कू करती वह
फिर अचानक एक दिन
पिंजडे में बन्द हो गइ ओर
उसे एक महल में
भेज दिया गया।

महल म सुख से थी
उसे अच्छा खाना मिलता
पालक उसे हाथ से
खिलाता नहलाता झुलाता आर
गाड़ी म विठाकर घुमाता
मेना का सब सुख थे
पालक को सब दुख थे
वह

मैना को बार-बार कहता
मैना आओ।
चहको गाओ
पर मैना गाना भूल गई थी
चहकना भूल गइ थी।

झरना

गुनगुनाता
बहता है रोज
पहाड़ों से लगकर
उतरता है रोज
नीचे फिर
फैलकर बढ़ता है
मैदानी घाटियों में
कंकरीले पथरीले
रास्तों में
रोज
बेखटके बेरोक।

पूछने पर कहता है
रोज रात पहाड़ों की
छातियों पर
चुपके चुपके
कोई अमृत भरता है वह
झरना है इसीलिए
झरता है वह।

बेला के फूल

बेला के फूल खिले ह
महक रही है इलाके की
धरती
गमक रही है
मीठी गध।

उठती है दिशाओं मे
सोंधी बास
नेपाल की सीमा पर
बसा
छोटा सा गाव
बेला थाना।

हम घूमते है
मदहोश करने वाली
बयार मे
फूलो के मीठे स्वाद का
आनन्द लेते

फूलों की
छोटी-छोटी कलिया दिखतीं
जैसे हों
बड़े बड़े मोती
उगते डालियों में।

अजुरी भरी थालियों में
इकट्ठा करते है
तोड़-तोड़
पत्तल के दोनों में।

पीला रग

पीला रग
उन्माद का रग है
यह जीवन में
ताजगी घोलता है
उसे देखकर
पहनकर लोग
उमगों से भर जाते हैं
वसत के इस
जीवत रग में
डूब जाते हैं।

पीले रग में खिलती है
गरमी
यह खेतों में छा जाती है
और ऐसे लहराती है
जैसे
उमड़ पड़ा हो
पीले रंग का समुद्र।

पीले रग मे खिलते है
सूरजमुखी गेदा गुलाब
कनेर चम्पा और
बहुत सारे फूल
जो अपनी महक और
रगो में हर जगह शोभित होते है।

पीले रग की ओढनी मे
उछलती चलती है
अल्हड युवतिया
अपनी सुन्दरता में
चार चाद लगातीं
अपने प्रिय के गीत गातीं
सचमुच पीला रग
आनद उल्लास और
उत्सव का रग है
इसीलिए तो
सब को पसन्द है।

ज्वालामुखी

भीतर ही भीतर
सुलगती है एक आग।

ऊपर से नीचे तक
जलते है अगारे
धधकती है
धमनिया
चिन्गारिया उठती हे
दौडती है शिराओ में
जमीन के भीतर है
वह आग
पहाड के भीतर ही भीतर
सुलग रही हे
ऊपर से दिखती नहीं।

वर्षों से दहक रहा है
हदय
खुलकर कुछ भी

गुनगुनाना आता नहीं।

लेकिन एक दिन
अचानक होगा
भयंकर विस्फोट
जब सारी चीजें
यथावत थे
बाहर हो जाएंगी
ज्वालामुखी
फूटेगा और ध्वस्त
हो जाएगा
बहुत कुछ।

नगे पैर

वे जो चलते है
नगे पैर
रखते है मजबूती से इन्हे
धरती की छाती पर
रौंदते है उसे अपने
कठोर आघातों से
पाने के लिए बहुत कुछ।

वे कडी काठी के होते है
जो अपनी ताकत और
वजन से
उत्पन्न करते है
खुशहाली
खेत-खलिहानों
कल-कारखानों
वस्त्र-परिधानों में
बोते है
सुबहें

पूरी रात निर्विघ्न सान के लिए।

होते हैं वे लोग
धरती पर चलते हुए
नग पैर
वे नहीं देखते
इजन गाड़िया
वायुयान
उन्हें नहीं सुहाती
डिब्बावन्द जिन्दगी
उनके हौसले होते है
बुलन्द
जिनके पैर माटी में
सने रहते है
वे उछलते ह
आसमान में
धरती से लगे रहते है
चलते है नगे पैर।

उडना

सूर्य के
अकगणित से
बीते दिना का हिसाब
लगाना मुश्किल हे
उसकी चाल से
अपने कदम
मिलाना मुश्किल है।

चाहे जितने तज
चलें हम
पर
सूय को
हाथ लगाना मुश्किल हे
उसक पास
जाना मुश्किल ह।

अच्छा हो हमारं
कदम

सीध रास्तों पर
ही चलें
पर
उन पर
पख लगाकर
उड़ना मुश्किल है।

घर छोडते हुए

उस दिन केसा लगा होगा
जिस दिन अपना घर छोड़ना पड़ा होगा
भरे हुए मन से
जब हुए होंगे विदा
आखों मे पानी भरा होगा।

बाहें फलाकर मिलते हुए
जब अपना की गरमाहट
महसूस की होगी
घर के दरवाजे तक
लोग भारी मन से
बाहर सड़क तक आए हागे
बूढे-युवा-छोट सबने मिलकर
यात्रा की शुभकामनाए देते हुए
जल्दी लोट आने को कहा होगा।

शुभ सकेतों के चिह्न अकित किए हागे
सामन से कोई साभाग्यवती गुजरी होगी

मन को कठोर करते नजरें चुराए
अपने मोह को पीछे छाडते
जब कोई आगे बढ गया होगा
वह ड्योढी पर झुक कर कुछ
देर रुक गया होगा
उसने
अपनी माटी को प्रणाम किया होगा
जिसकी गध नासिका मे बसी होगी।

तब वह
मुह छिपाकर अवश्य रोया होगा
ऐसे मे जो कोइ
घर छोड गया होगा
अपना घर अपने साथ ले गया होगा।

यादो के सिवाय

यादों के
सिवाय
कुछ भी नहीं
इस जिन्दगी में
जो साथ-साथ
रात-दिन
चिपकी रहती है।

कुछ चीजे है
जो छिटककर
अलग हो जाती है
कुछ घेरकर
सटी रहती है।

हम जब भी
अकेले होते है
उन बातों हादसो को
कुरेदते है

फिर
एक एक कर व
खुलने लगती है
तैरने लगती हैं
किसी फिल्म की तरह
आखो मे
हमे डुबोते हुए।

कुछ बहुत मीठे-कडवे
सपनों में
हम सिफ उन दिनो
उस गुजरे हुए समय मे
बहाती रहती हैं यादे।

सच पूछा जाए तो
इतना ही है इस जिन्दगी मे
हम उन्ह याद करत ह
सुखी होते हैं
दु खी होते ह
गुजरे समय मे
डूबते तैरते रहते है।

सूखी हुई नदी

वह नदी अब
सूख गई है।

कभी वह उफन कर
गद-गद हो हरहराती
बहती थी
अब परती हो गई है
उसके तल मे
दरारें पड गई है
वह क्षत-विक्षत होकर
पसर गई है।

अब उसकी माटी में
नमी नहीं रही
जमीन जगह जगह
सख्त होकर फट गई है।

कभी लोग
उस पर बने पुल पर

चढकर
उसमें छलांग लगाकर
डुबकियां लगाते
नहाते थे
युवतियां अपने भीगे
आंचलों में लौटती थीं
अब सब कुछ बदल गया है।

नदी किसी अनाथ विधवा की
तरह सिसक रही है
लोग अब उसकी छाती पर
पैर रखकर रौंदते हुए
उस पार जाते हैं
वह सब कुछ सह रही है
अपने मौन से
भीतर ही भीतर कुछ कह रही है।

मैंने कितना कुछ दिया
मेरे दोनों किनारों पर
उगे आम-जामुन
पीपल-बरगद
नीम के पेड़
आज भी हरे हैं
वे नहीं मरे हैं
मैंने उन्हें जीवित रखा है।

आज मे सूख गई हूँ
अर्थहीन हो गई हूँ
पर एक दिन मै भर उठूँगी
बहूँगी और कहूँगी
मै बाझ नहीं हूँ, सूखी नहीं हूँ
बस
मुझे वर्षा की प्रतीक्षा है।

टूटा हुआ तारा

एक तारा
चमकता है
रात के आकाश में
बहुत तेज है उसकी
रोशनी
सबसे अलग लगता है वह
देखते ही बनती है
उसकी आभा
उसकी चमक।

पर अचानक
देखते ही देखते
टूट कर गिर जाता है
बहुत तेजी से चला जाता है
अतरिक्ष की कोख मे
जब तक सभल कर
देखे कि
कहा गायब हो गया

आखों से
ओझल हा गया
वह
दूर किसी
अज्ञात गर्भ में
शायद
नया जन्म लेने।

बुझे हुए दिये

ये बुझे हुए दिये है
इन्हें न रौदो।

कभी ये जगमगाते थे
अधेरे को रोशनी देते थे
लोग उसमे सब कुछ
देख सकते थे
अब ये
काले-कलूटे हो गए है
बत्तियॉ बुझ गई है
तेल जल कर
खत्म हो चुका है।

अब ये जहा तहा बिखरे पड़े है
सड रहे है
इन्हें कोई नहीं पूछता।

कभी ये घर की प्राचीरों
ड्योढी, दरवाजों, आगन

पूजाघर, रसोई
परिंडे में
जलते थे
अब ये
उलटे पड़े हैं।

इन्हें ठोकरें न मारो
इन्हें सभालो बटोरो
और किसी अच्छी
जगह रख दो
ये उनके ज्योतिर्वान
दिनों की यादें हैं
जो जलकर गुम हो गई हैं।

अपने पैरों को
सभाल कर चलो
इन्हें न रौंदो
नहीं तो फिर कोई
नया दिया
जलने की
हिम्मत नहीं करेगा।

छिपकर देखना

एक दिन
छिप जाऊँगा
अपनी मृत्यु का
ऐलान करते
अन्धेरे में गुम हो जाऊँगा।

फिर देखूगा
लोग
मेरी मौत पर क्या बोलते हैं
मेरी कविताओं को कैसे तौलते है
लोग एकत्र हुए
उन्होंने एक एक कर
मेरी कविताओ को पढ़ा
मुझे यह सुनकर अच्छा लगा।

मै उन्हे अब बहुत
बड़ा कवि दिखा

मैने बहुत अच्छा लिखा
अब मुझे
मेरा सचमुच मर जाना
नहीं अखरा
लगा
मुझे जीना चाहिए
और अच्छा
लिखना चाहिए।

पतझड

इन पत्तों पर
अब वह रग नहीं रहा
गहरा हरा रग
जो कभी बहुत ताजा था
वह सूखकर पीला हो गया है
डार पर सिर्फ
सूखी पत्तिया रह गई है
सारे पत्ते
एक-एक कर विपरीत
हवाओ और आधियो में
झर गए है
धूल को समर्पित हो गए है।

पेड क्या है
अब महज एक उदास
ठूठ हे
आखिर
वह अभिमान किस काम का

जो बेमतलब
ललाट उन्नत रखे
भूल जाए कि
उसके पैर भी है
जिन्हें जमीन की जरूरत है।

आँधिया कठोर होती है
किसी को नहीं छोड़तीं
सबको बुरी तरह
झकझोरती है
हुकारती हुई कहती है
पतझड आ गया हे।

झरो-झरो जल्दी करो
जगह खाली करो
नयों के आने का
समय हो गया है
मौसम बदल गया है।

नदी मे खून

अचानक देखा
नदी का रग लाल हो गया ह
यह इन्सानों का खून है
पहल यह
गर्म खोलते पानी-सा
उबला
पर बाद में बिलकुल ठडा होकर
बहने लगा
यह एक दो नहीं
हजारा इन्सानो का खून है
जो उनकी धमनिया को
चीरकर बहने लगा ह।

यह नदी पहाडों से
नहीं निकली है
इसका उद्गम
आदमजात की
रक्त लोलुपता का
महादुष्परिणाम है।

घात लगाकर
बेगुनाह लोगा को
उनके घरा से खींचकर
हलाल किया गया है
ऐसा दृश्य
दोजख म भी
नहीं मिलेगा
लोग मरे हे
मजहब के नाम पर
कत्ल किए गए

यह साबरमती नहीं हे
न ही गगा है जमुना है
न ही कृष्णा-कावेरी
यह हे
नृशसता की नदी

इस रक्तपात ने
सारे दानवी कीर्तिमान
भग्न कर दिए हें
नादिर और चगज भी
शर्मिन्दा है
आतक से नदी थरथरा रही ह
वह अपने आचल मे ढक
यह रक्त
बहा कर ले जा रही ह।

आस-पास के हरियाले खेत
दहशत में है
कहीं यह रक्त भीगा पानी उनकी
माटी में न आ जाए।

खून में डूबी नदी
मुर्दा लाशो को
गाद में लिए
रो रही है
सिसकते हुए
लाशो को
ढो रही है।



मानिक बच्छावत

जन्म	11 नवबर 1938 (कलकत्ता)
शिक्षा	एम ए (कलकत्ता विश्वविद्यालय)
काव्य संग्रह	नीम की छाह (1960) एक टुकडा आदमी (1967) भीड़ का जन्म (1972) रेत की नदी (1987) एक टुकरो मानुष (बगला म अनूदित) पीड़ित चेहरा का मर्म (1994) तुम आओ मेरी कविता म (2000) फूल मेरे साथ है (2001)
गद्य	जुलूसा का शहर (1973) आदम सवार (1976)
अनुवाद	प्रतिद्वद्वी (सेरेडन के 'राइवल्स का हिंदी अनुवाद) विदेशी कविताआ का अनुवाद
अन्य लेखन	कला समीक्षाए
संपादन	मारीशस की हिंदी कविताए (1970) अक्षर कविता पत्रिका का सपादन (1965 70)